कथा सरिता

दान देने से पहले ज़रा सोच लें

एक समय की बात है। एक बार एक गरीब आदमी एक सेठ के पास जाता है और भोजन के लिए सहायता मांगता है। सेठ बहुत धर्मात्मा होता है। वो उसे पैसे देता है। पैसे लेकर व्यक्ति भोजन करता है, और उसके पास जो कुछ पैसे बचते हैं, उससे वो शराब पी लेता है। शराब पीकर घर जाता है और अपनी पत्नी को मारता है। पत्नी दु:खी होकर अपने दो बच्चों के साथ तालाब में कूदकर आत्म हत्या कर लेती है।

कुछ समय बाद उस सेठ की भी असाध्य रोग से मृत्यु हो जाती है। मरने के बाद सेठ जब ऊपर जाता है तब यमराज बोलते हैं: 'इसको नर्क में फेंक दो।' सेठ यह सुनकर यमराज से कहता है: 'आपसे गलती हुई है, मैंने तो कभी कोई पाप ही नहीं किया है, बल्कि जब भी कोई मेरे पास आया हैं, मैंने उसकी हमेशा मदद ही की है। इसलिये मुझे एक बार भगवान् से मिला दो।' तब यमराज उसे बोलते हैं: 'हमारे यहाँ तो गलती की कोई संभावना नहीं है, गलतियां तो तुम लोग ही करते हो।' पर सेठ के बहुत कहने पर यमराज उसे भगवान् के समक्ष पेश करते हैं। भगवान् के सामने जाकर सेठ बोलता है: 'प्रभु, मैंने तो कोई पाप किया ही नहीं है, तो मुझे नर्क क्यों दिया जा रहा है।'

तब भगवान् उसे उस गरीब व्यक्ति को पैसे देने वाली बात बताते हैं: 'उस व्यक्ति की पत्नी और दो बच्चों की जीव हत्या का कारण तू है। तू उसे पैसे न देता तो वो शराब पीकर अपनी पत्नी को दु:ख नहीं देता।' सेठ बोलता है: 'प्रभु, मैंने तो एक गरीब को दान दिया है और शास्त्रों में भी दान देने की बात लिखी है।' तब भगवान् ने कहा: 'दान देने से पहले पात्र की योग्यता तो परखनी चाहिए ना कि वो दान लेने के योग्य है या नहीं, या उसे किस प्रकार के दान की ज़रूरत है। तुमने धन देकर उसकी मदद क्यों की? तुम उसको भोजन भी करा सकते थे। और रही बात उसकी दरिद्रता की, तो उसे देना होता तो मैं ही दे देता, वो जिस योग्य था उतना मैंने उसे दिया। जब मैंने ही उसकी अयोग्यता के कारण उसे सब कुछ नहीं दिया, तो तुम्हें क्या ज़रूरत थी उसे धन देने की? तुम्हारे दिये हुए धन-दान के कारण तीन जीव हत्याएं हुई हैं और इन हत्याओं के पाप का फल अब तुम्हें भुगतना पड़ेगा।' कहने का तात्पर्य ये है कि दान देना बुरी बात नहीं, लेकिन देने से पहले ये परख लें कि आप जो दान कर रहे हैं, उसका उपयोग किसी पाप कर्म में तो नहीं हो रहा है। आप देखें कि आपका दान किसी का भला कर सार्थक हो भी रहा है या नहीं। भले ही दान हेतु आपके भाव श्रेष्ठ हों, लेकिन अगर आपके द्वारा दिये दान से कोई पाप कर्म फलित होता है, तो आपको उस दिए दान के पुण्य के साथ-साथ उसके पाप के फल को भी भोगना होगा। अगर आपके दान से कोई बुरा कर्म फलित करता है तो उसके साथ कर्म का भागीदार आपको भी बनना पड़ेगा, क्योंकि इस कर्म को फलित करने के लिए पानी देने का काम तो आप ही ने किया।

शांत सरोवर रुपी हृदय

एक बार बुद्ध एक नगर के बाज़ार से गुज़र रहे थे। तभी एक व्यक्ति उनके पास आया और बुद्ध को वंदन करते हुए बोला: 'भगवन्, यहाँ का नगर सेठ आपकी निंदा करते हुए आपको कुछ बोल रहा था। अगर आज्ञा हो तो बताऊँ कि वह आपके लिए क्या बोल रहा था।'

तब बुद्ध ने कहा, 'पहले मेरे तीन सवालों का जवाब दो, फिर आगे देखते हैं कि नगर सेठ की बातें सुनना है या नहीं। बुद्ध ने व्यक्ति से पूछा, क्या तुम्हें लगता है कि नगर सेठ ने मेरे बारे में जो कहा वो सत्य है?'

तब व्यक्ति ने कहा: 'नहीं भगवन्, मुझे तो उसकी बातों पर तनिक भी भरोसा नहीं है। उसने बोला इसलिए मैं आपको बताना चाह रहा था।'

बुद्ध ने दूसरा प्रश्न किया: 'क्या तुम्हें लगता है कि जिस बात को तुम बताने जा रहे हो उसे सुनकर मुझे दु:ख होगा?'

तब व्यक्ति ने कहा: 'हाँ भगवन्, उसे सुनकर दु:ख हो सकता है।'

तब बुद्ध ने अंतिम प्रश्न किया: 'क्या तुम्हें लगता है कि जो बातें तुम मुझे बताओगे वह मेरे किसी काम की हैं या उससे मुझे कोई लाभ होगा?'

व्यक्ति ने जवाब दिया: 'नहीं भगवन्, ये बातें न ही आपके किसी काम की हैं और न ही आपको कोई लाभ होगा।'

तब बुद्ध ने कहा: 'मेरा हृदय एक शांत सरोवर है, जिसमें मैं प्रेम, दया, करुणा के पुष्प रखता हूँ ! जिस बात पर तुम्हें ही यकीन नहीं है, जिस बात को सुनकर मुझे दु:ख हो और जो बात मेरे किसी काम की नहीं हैं अर्थात् व्यर्थ हैं, ऐसी बातों को सुनकर मैं अपने शांत सरोवर रूपी हृदय को क्यूं मलीन करूँ!'

व्यक्ति को ज्ञान मिल चुका था कि किसी दूसरे की बात को सुनकर ही विश्वास कर लेना काफी नहीं हैं, बल्कि स्वयं का विवेक जगाकर ऐसी निंदाजनक बातों से दूर रहना ही बेहतर है।

भाव से बड़ा कुछ नहीं

एक करोड़पति बहुत परेशान था। करोड़ों का घाटा लगा था, और सारी जीवन की मेहनत डूबने के करीब थी। नौका डगमगा रही थी। वो कभी मंदिर नहीं गया था, कभी प्रार्थना भी न की थी। फुर्सत ही न मिली थी!

पूजा के लिए उसने पुजारी रख छोड़े थे, कई मंदिर भी बनवाये थे, जहां वे उसके नाम से नियमित पूजा किया करते थे, लेकिन आज इस दु:ख की घड़ी में कांपते हाथों वह भी मंदिर गया! सुबह जल्दी गया, ताकि परमात्मा से पहली मुलाकात उसी की हो, पहली प्रार्थना वही कर सके। कोई दूसरा पहले ही मांग कर परमात्मा का मन खराब न कर चुका हो! बोहनी की आदत जो होती है, कमबख्त यहां भी नहीं छूटी....सो सुबह-सुबह पहुंचा मन्दिर।

लेकिन यह देख कर हैरान हुआ कि गांव का एक भिखारी उससे पहले से ही मन्दिर में मौजूद था। अंधेरा था, वह भी पीछे खड़ा हो गया, कि भिखारी क्या मांग रहा है? धनी आदमी सोचता है, कि मेरे पास तो मुसीबतें हैं; भिखारी के पास क्या मुसीबतें हो सकती हैं? और भिखारी सोचता है कि मुसीबतें मेरे पास हैं। धनी आदमी के पास क्या मुसीबतें होंगी? एक भिखारी की मुसीबत दूसरे भिखारी के लिए बहुत बड़ी न थी!

उसने सुना, कि भिखारी कह रहा है: 'हे परमात्मा ! अगर पाँच रुपए आज न मिले, तो जीवन नष्ट हो जाएगा। आत्महत्या कर लूंगा। पत्नी बीमार है और दवा के लिए पाँच रुपए होना बहुत ज़रूरी है। मेरा जीवन संकट में है।'

अमीर आदमी सब सुनता रहा। वह भिखारी बंद ही नहीं हो रहा है; कहे जा रहा है और प्रार्थना जारी है! तो उसने झल्लाकर अपने खीसे से पांच रुपए निकाल कर उस भिखारी को दिए और कहा: 'जा ये ले जा पाँच रुपए, तू ले और जा जल्दी यहां से!'

अब वह परमात्मा से मुखातिब हुआ और बोला: 'प्रभु, अब आप ध्यान मेरी तरफ दें, इस भिखारी की तो यही आदत है। दरअसल मुझे पाँच करोड़ रुपए की ज़रूरत है!'

भगवान मुस्करा उठे बोले: 'एक छोटे भिखारी से तो तूने मुझे छुटकारा दिला दिया, लेकिन तुझसे छुटकारा पाने के लिए तो मुझको तुमसे भी बड़ा भिखारी ढूंढ़ना पड़ेगा! तुम सब लोग यहां कुछ न कुछ मांगने ही आते हो, कभी मेरी ज़रूरत का भी ख्याल आया है?'

धनी आश्चर्यचकित हुआ और बोला: 'प्रभु, आपको क्या चाहिए?'

भगवान बोले: 'प्रेम! मैं भाव का भूखा हूँ। मुझे नि:स्वार्थ प्रेम व समर्पित भक्त प्रिय हैं! कभी इस भाव से मुझ तक आओ; फिर तुम्हें कुछ मांगने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी!!'

मंदसौर-म.प्र.। विश्व पृथ्वी दिवस पर तेलिया तालाब पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश रातड़िया, ब्र.कु. समिता, ब्र.कु. हेमलता, डॉ. राघव जोशी, पामेचा जी, डॉ. दिनेश तिवारी तथा अन्य गणमान्य लोग।

नीमच-म.प्र.। ब्रह्माकुमारी संस्थान की महाप्रबंधक ब्र.कु. मुन्नी दीदी के नीमच आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में उनके साथ दीप प्रज्वलित करते हुए सबज़ोन डायरेक्टर ब्र.कु. सुरेन्द्र, सबज़ोन प्रभारी ब्र.कु. सविता तथा अन्य।

नवरंगपुर-ओडिशा। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए स्ट्रेस मैनेजमेंट एक्सपर्ट ब्र.कु. पूनम, जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेन्द्र पनीग्राही, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

कटनी-पड़रिया। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'श्रीमद् भागवत् कथा पुराण' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कोरबा से आई कथावाचक ब्र.कु. विद्या, भजन गायक सादराम, ब्र.कु. ऋतंजली के साथ आमंत्रित गणमान्य जन आध्यात्मिक चेतना संघ के प्रांत सेवा प्रमुख प्रकाश भोमिया, जिला सेवा प्रमुख योगेंद्र कुमार, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

अलिराजपुर-म.प्र.। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के पश्चात् ब्र.कु. नारायण को सम्मानित करते हुए राजपूत समाज के अध्यक्ष हेमन्त जी तथा अन्य विशिष्ट लोग।

इंदौर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा हम्पटी डम्पटी स्कूल में आठ से पंद्रह वर्ष के बच्चों के लिए तीन दिवसीय शिविर के दौरान बच्चों को नैतिक मूल्यों पर समझाते हुए ब्र.कु. प्रमिला।